RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 31 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 29 अक्तूबर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–74, अंक :31, 26–29 अक्तूबर 2017 तदनुसार 13 कार्तिक सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मिलकर बलवान् धूम करो

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

कृणोत धूमं वृषणं सखायोऽस्त्रेधन्त इतन वाजमच्छ।
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवासो असहन्त दस्यून्।।
–ऋ० ३।२१।१

शब्दार्थ–हे सखायः = समान मनोभावोंवाले सज्जनो! वृषणम् = बलशाली धूमम् = धूम कृणोत = करो अस्त्रेधन्तः = हिंसित न होते हुए वाजम् = संग्राम में अच्छ = अच्छी तरह इतन = जाओ। अयम् = यही अग्निः = अग्नि पृतनाषाट् = फ़ितनों को दबाने वाला, युद्धों में विजय दिलाने वाले तथा सुवीरः = बड़े वीरों वाला है और येन = जिसके द्वारा देवासः = देव, सदाचारी दस्यून् = दस्युओं को असहन्त = दबाते हैं।

व्याख्या–शत्रु से युद्ध करना है। युद्ध के लिए तैयारी करनी होती है। यदि शत्रु से लड़ने के लिए भेजी जानेवाली सेना शत्रु के प्रति उदासीन भाव रखती है, तो वह वीरता से न लड़ेगी। सम्भव है, अवसर आने पर शत्रु से मिल भी जाए। इसी प्रकार यदि राष्ट्र के नायक किसी शत्रु के विरुद्ध युद्ध-घोषणा करते हैं, किन्तु राष्ट्रवासी उसके लिए उपेक्षा का भाव रखते हैं तो पराजय-कलङ्क से भाल को दूषित होता देखने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसे उपेक्षावृत्तिवाले सैनिक तथा राष्ट्र संग्राम में विजय कभी भी प्राप्त नहीं कर सकते।

विजय के अन्य आवश्यक साधनों के साथ विजयाभिलाषी योद्धाओं के हृदय में शत्रु के प्रति घोर असन्तोष होना चाहिए। वेद इसलिए कहता है–'कृणोत धूमं वृषणं सखायः' = तुम सब मिलकर बलशाली धूम करो। धूम का अर्थ है कम्पा देनेवाला। राष्ट्र तथा सेना का धूम-शत्रु को अवश्य कम्पा देगा। यह धूम उत्पन्न करना किसी एक का कार्य नहीं, वरन् सबका कार्य है, अत: सबको मिलकर इसकी उत्पत्ति में यत्नशील होना चाहिए।

राष्ट्र में धूमोत्पादन के कार्य में लगे लोगों के लिए एक शर्त और भी है, वह यह कि वे 'सखा' = हों, एक दूसरे के मित्र हों, एक-से विचार रखते हों, परस्पर-विरोधी न हों, क्योंकि फूट के शिकार तो मृत्यु के ग्रास बनते हैं। इस कार्य में एक और सावधानता भी बर्तनी पड़ती है, वह यह कि कहीं इसमें अपनी हानि न हो जाए, अत: वेद का आदेश है–'अस्त्रेधन्त इतन वाजमच्छ'–हिंसित न होते हुए संग्राम को भली प्रकार जाओ।

संग्राम में जाने से पूर्व ही यदि हिंसित हो गये, तो संग्राम में क्या करेंगे? अर्थात् अपना सब तरह का बचाव करके संग्राम में जाना चाहिए। नीतिकारों के मत में 'शुद्धपार्ष्णिः' (पीछा जिसका शुद्ध है) होकर संग्राम में जाना चाहिए। ऐसा न हो कि सेना शत्रु से जूझ रही हो और पीछे से प्रकृति-प्रकोप उठ खड़ा हो, या कोई दूसरा शत्रु आक्रमण कर दे। धूम जब होगा तो अग्नि भी होगी। यह अग्नि ऐसा है कि इससे सारे फ़साद, उपद्रव मिट जाते हैं।

यह मन्त्र आध्यात्मिक सूक्त का है। आध्यात्मिक अर्थ की कल्पना पाठकों पर छोड़ी जाती है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत–कौशल भारत

आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

वायवायाहि दर्शतेमे सोमा अरंकृता।
तेषां पाहि श्रुधी हवम्।। –ऋ० १.२.९

भावार्थ–हे अनन्त बल-युक्त जीवनदाता दर्शनीय परमात्मन्! आप अपनी कृपा से हमारे हृदय में प्रकाशित होवें और जो उत्तम-उत्तम पदार्थ आपने रचे और हमको दिये हैं, उनकी रक्षा भी आप करें। हमारी इस नम्रतायुक्त प्रार्थना को कृपा करके सुने और स्वीकार करें।

वेदों की त्रिकाल प्रासंगिकता

-ले. डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक' 314, आचार्यकुलम, पतंजलि योगपीठ फेज-2 हरिद्वार

वेदों के ज्ञानी, तटस्थ, अज्ञानी और नास्तिक, चारों प्रकार के मनुष्य वेदों की प्रासंगिकता अप्रांसगिकता पर प्राय: विचार प्रकट करते रहते हैं। इससे वेदों का महत्त्व सिद्ध होता है कि सब लोग वेदों की चर्चा से ही अपने सिद्धान्त प्रतिपादित करना चाहते हैं। अत: आइए, मिलकर विचार करें कि वेदों की महत्ता, प्रामाणिकता और प्रासंगिकता क्या है?

ज्ञान के स्रोत

'वेद' शब्द 'विद ज्ञाने, विद सत्तायाम् विद विचारणे और विद्लृ लाभे' धातुओं से व्युत्पन्न होता है जिनके अर्थ हैं-ज्ञान, सत्ता, विचार और सुखलाभ। वेद वे ग्रन्थ हैं जिन्हें पढ़ने से यथार्थ ज्ञान होता है, लोग विद्वान बनते हैं, सत्य-असत्य का विचार मिलता है और सुखों का लाभ होता है। इस कारण सृष्टि के आदि से वर्तमान समय तक और ऋषि ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द तक सब मनुष्य ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद पढ़कर ज्ञानी होते आये हैं। वस्तुत: चारों वेद ज्ञान के स्रोत हैं।

ब्रह्मचर्य को पोषक

'ब्रह्म' शब्द के मुख्य अर्थ दो हैं-(1) ईश्वर,(2) वेद। ईश्वर 'परब्रह्मा' है और वेद 'शब्दब्रह्म है और वेद 'शब्दब्रह्म' है। वैदिक संस्कृति का सबसे व्यापक भाव है-'ब्रह्मचर्य अर्थात ब्रह्म में चर्या। मनुष्य परब्रह्म का विचार करके उसे जाने और प्राप्त करे। शब्दब्रह्म पर विचार करे विद्वान्, धार्मिक एवं चरित्रवान् बने। मनुष्य को ही ब्राह्मण कहा गया अर्थात् शब्दब्रह्म का ज्ञानी और परब्रह्म का भक्त। ब्रह्मचर्य ही सब गुणों का आधार, सब आश्रमों का मूल और सब विद्याओं का सार है। वेद ब्रह्मचर्य के पोषक हैं।

शिक्षा का मुख्य भाग

भारतवर्ष के स्वर्ण-युग में चारों वेदों को बालकों की शिक्षा का मुख्य भाग रखा जाता था। इतिहास बताता है कि संसार की प्रथम पुस्तक 'ऋग्वेद का अर्थ निकालना विद्वानों के लिए कठिन माना जाता है। जरा विचार कीजिए कि उस युग में मनुष्य की बृद्धि एवं विद्या का क्या स्तर रहा होगा जबकि ऋग्वेद के अनुसार आचार व्यवहार होता था। आज भारत अपनी प्राचीन गौरव की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील है। इसके लिए चारों वेदों को राष्ट्रीय शिक्षा का मुख्य भाग बनाना होगा।

परिवार का पोषक

वेद परिवार का पोषक है। वेदों में परिवार की उन्नति एवं संगठन के अनेक मन्त्र हैं। एक मन्त्र निम्नलिखित है-

अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु संमना:। जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।।

-अथर्ववेद: काण्ड-3, सूक्त-30, मन्त्र-2

अर्थात् पति-पत्नी एक दूसरे की प्रसन्नता के लिए शान्त होकर मधुर भाषण किया करें और सन्तान पिता के अनुकूल आचरण वाली एवं माता के साथ प्रीतियुक्त मन वाली हो।

परिवारों को सुपरिवार बनाने में वेदों की यह शिक्षा बेजोड़ है।

राष्ट्र का पोषक

परिवार को छोटा राष्ट्र और राष्ट्र को बड़ा परिवार कहा जा सकता है। अच्छे राष्ट्र में सब नागरिक परिवार के सदस्य की भाँति रहते हैं वेद राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद का भी पोषक है। वेदों में आया हुआ एक मन्त्र इस प्रकार है-

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्य:

शूऽइषुव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा

नड्वानाशु: सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा: सभेयो युवास्य

यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु

फलवत्यो नऽ ओषधय: पच्यन्तां योगक्षेमो न: कल्पताम्।।

-यजुर्वेद: अध्याय-22 मन्त्र-22

अर्थात हमारे राष्ट्र में विद्वान लोग ईश्वर और वेदों के ज्ञाता हों, राजपुरुष शूर हों, सैनिक-वर्ग' वीर हो, गायें दुधारु हों, बैल भारवाहक हों, घोड़े तीव्रगामी हों, नारी जाति पुरुष-वर्ग एवं बाल-वर्ग का धारण करने वाली हो, युवा वर्ग सभ्य एवं बलवान् हो, समुचित वर्षा होती रहे, वनस्पतियाँ फलवती हों और समस्त नागरिक योग-क्षेम से रहें।

इस वैदिक प्रार्थना में ऐसे राष्ट्र की कामना की गई है जिसमें प्रत्येक श्रेणी के नागरिक उत्तम हों, सब पूरक भाव से रहें और धर्म अर्थ सुख यथेष्ट हों। इसमें किसी राष्ट्र को शत्रु नहीं बताया गया, किसी सम्प्रदाय की गन्ध नहीं और किसी प्रकार के किसी शोषण का कोई बीज नहीं है।

लोकतन्त्र का स्रोत

वेद लोकतन्त्र का स्रोत है। अपूर्ण ज्ञान वालों को यूरोप-देश लोकतन्त्र का जनक प्रतीत होता है। वे तनिक वेदों के निम्नलिखित मन्त्र पर दृष्टिपात करें-

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्रमेषाम्।

समानं मन्त्रमभि मन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।

-ऋग्वेद: मण्डल-10 सूक्त-191 मन्त्र-3

इस मन्त्र में 'समिति' शब्द संसार में भी सर्वप्रथम आया है। इसके पूर्व-मन्त्र में भी संगच्छध्वं संवदध्वम्' कहकर विचार-विमर्श से सामूहिक निर्णय लेने का संकेत दिया गया है। यही लोकतन्त्र का आधार है। अन्य मन्त्र भी हैं, यथा-

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथ: सदांसि।।

-ऋग्वेद: मण्डल-3, सूक्त-38,मन्त्र-6 अर्थात् 'राजा और प्रजा मिलकर विद्या, धर्म एवं प्रशासन के लिए तीन सभायें बनायें वेदों के आधार पर ही महर्षि मनु ने राजधर्म के सूत्र संगठित किये हैं वेदों के आधार पर ही आजाका लोकतन्त्र लोक कल्याणकारी बन सकता है।

मोक्ष का प्रेरक

ऋषि दयानन्द ने वेदों का अनुसन्धान पूर्वक अध्ययन करके आख्या दी है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं में अध्यात्म विद्या या ईशप्राप्ति विद्या या मोक्ष विद्या भी सम्मिलित है। वेद बाह्य आस्तिक तो ईश्वर के स्वरूप तथा मोक्ष के सिद्धान्त को ही नहीं समझ पाते। कोई कहता है ईश्वर नेत्रों से दिखाई देता है; ईश्वर में लय हो जाना मोक्ष है। कोई कहता है ईश्वर जीव जगत् एक ही है ईश्वर जिसे चाहे स्वर्ग दे दे और जिसे चाहे नरक दे दो। कोई कहता है ईश्वर फरिश्ते या मसीहा की संस्तुति पर कर्म फल देता है।

वेदों में ही मोक्ष की सही प्रेरणा दी गई है। इस विषय पर एक मन्त्र निम्नवत् प्रस्तुत है-

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।

आयु: प्राणं प्रचां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

-अर्थववेद: काण्ड़-19 सूक्त-71 मन्त्र-1

अर्थात सब लोग वेदमाता की स्तुति करें वेदमाता द्विजों को प्रेरणा देने और पवित्र करने वाली है आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति धन ज्ञान तेज की प्रदात्री है। इनसे आगे जो बढ़ सके वह मोक्ष अर्थात् ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।

धर्म के स्रोत

चार वेद ही सब मनुष्यों के धर्म-ग्रन्थ हैं। संसार में एक-के-बाद-एक सम्प्रदाय बन जाने के कारण धर्मग्रन्थ की परिभाषा विवादग्रस्त हो गई है। महर्षि मनु ने मार्गदर्शन करते हुए कहा था-

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। -मनुस्मृति: अध्याय-1, अर्थात वेद ही धर्म के मूल या स्रोत हैं।

सब मनुष्यों का एक धर्म है। धर्म वह आचरण है जिससे भौतिक तथा आत्मिक उत्थान होता है। रिलीजन अथवा पन्थ को धर्म नहीं कहते। ये तो धर्म के विरोधी और एकता में बाधक हैं। परोपकारी विद्वान मिलकर विश्व को सम्प्रदाय: मुक्त करें। साथ ही, वेदों को धर्मग्रन्थ घोषित कराकर वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सर्वत्र सुनिश्चित करें।

अर्थ के स्रोत

वेदों में अर्थ अर्थात् भौतिक जीवन के उत्कृष्ट सूत्र पिरोये हुए हैं। ऋग्वेद का उपवेद 'आयुर्वेद' है अर्थात् वैद्यकशास्त्र। यजुर्वेद का उपवेद 'धनुर्वेद' है अर्थात् युद्ध-विद्या एवं राजधर्म। सामवेद का उपवेद 'गान्धर्ववेद' है अर्थात् गानशास्त्र। इस प्रकार चारों उपवेदों में आर्थिक एवं भौतिक जीवन की उन्नति के समस्त सूत्र उपलब्ध हैं। भारत जब तक इन सूत्रों का अनुसरण करता रहा, तब तक 'सोने की चिड़िया' बना रहा। अब पुन: इनका अनुसरण प्रारम्भ करे तो पुन: समृद्धि का पर्याय बन सकता है।

मानव-मात्र का संविधान

वेद मानव-मात्र का संविधान है। वेदों में भारत, चीन, जापान आदि देशों का भेद नहीं किया गया। धनी-निर्धन या स्त्री-पुरुष में विभेद नहीं किया गया। जो लोग वेद को नहीं मानते, उनके प्रति भी अनिष्ट-चिन्तन नहीं किया गया। मनुष्य के समस्त धरातल वेदों से समान पोषण पाते हैं। कोई ब्रह्मचारी हो या संन्यासी राजा हो या कृषक विद्या कमाता हो

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति का अनुसरण करें

शिक्षा मानव समाज का अभिन्न अंग होने के कारण मानव के निर्माण का प्रमुख घटक है। मनुष्य की जीवन यात्रा का आरम्भ शिक्षण से होता है। विद्यार्जन की साधना ही व्यक्ति के भावी जीवन की सफलता का मूलमन्त्र है। समुचित विकसित जीवन के लिए शिक्षा की महत्ता को सभी ने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है। परन्तु विडम्बना यही है कि शिक्षा जगत् में प्रबल प्रयत्न करने पर भी मानव का समुचित निर्माण एवं विकास दृष्टिगोचर नहीं हो रहा। समय-समय पर मनीषियों द्वारा शिक्षा को परिभाषित किया जाता रहा है। यहाँ हम महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के स्वरूप को उद्घाटित करने का प्रयास करेंगे जिसके परिपेक्ष्य में व्यक्ति निर्माण की इकाई के साथ समाज व राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। शिक्षा के विषय में महर्षि की मान्यता है- जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियता आदि गुणों का विकास हो और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं। इसी तथ्य को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व्यवहारभानु में स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि- जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़ के सदा आनन्दित हो सके, वह शिक्षा कहाती है।

महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार शिक्षा परिष्कार तथा संस्काराधान का प्रथम साधन है। इसी विचार से उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के दूसरे एवं तीसरे समुल्लास प्रमुखत: शिक्षा के सम्बन्ध में ही लिखे। इन दोनों समुल्लासों में शिक्षा के प्राथमिक व मूलभूत सिद्धान्तों का वर्णन करते हुए बाल शिक्षा तथा अध्ययनाध्यापन विधि के अन्तर्गत शिक्षणालयों के लिए पाठ्यक्रम की भी समायोजना की है। शिक्षा मानव निर्माण की प्रमुख सोपान है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए दूसरे समुल्लास के आरम्भ में शतपथ का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए स्वामी जी लिखते हैं- मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरूषो वेद। अर्थात् प्रशस्त माता, प्रशस्त पिता, तथा प्रशस्त आचार्य वाला पुरूष ही ज्ञानवान होता है। सुयोग्य माता-पिता व आचार्य के संरक्षण में बालक मानवीय गुणों को धारण करके मानव संज्ञा को सार्थक करता है। इस समुल्लास में वर्णित बाल शिक्षा की उत्तम प्रणाली गृहस्थों के लिए वरणीय एवं उपयोगी है। यह मनुष्य निर्माण की आधारभूत शिक्षा है, जिसे माता-पिता के द्वारा घर में प्रदान किया जाता है। तदनन्तर गुरूकुल पाठशाला में अध्ययन का क्रम आरम्भ होता है। जिसमें वह आचार्य का अन्तेवासी बनकर शास्त्रीय ज्ञान को अधिगत करता हुआ उसे आचरणरूप में भी आत्मसात् करता है तथा विद्या को प्राप्त करके स्नातक की उपाधि से अलंकृत हो जाता है। विद्वान् शिक्षक का स्वरूप तथा उनके कर्तव्य को बोध वेद में विस्तार से वर्णित किया गया है। वेद की दृष्टि में विद्वान् कहलाने के लिए केवल विद्या ही आवश्यक नहीं अपितु उसके साथ तपस्या, धार्मिकता व सदाचार आदि गुण भी होने चाहिए। ऋग्वेदीय प्रमाण से महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि- वही वस्तुत: विद्वान् है जो स्वयं धर्म मार्ग पर चलता हुआ अन्यों को सुगम और दुर्गम मार्गों में से धर्म मार्ग का उपदेश कर सके।

महर्षि दयानन्द जी ने मन्त्रों के भाष्य में विद्वानों के कर्त्तव्यों का प्रतिपादन करते हुए उन पर विद्या-प्रचार तथा समाज सुधार का एक बड़ा उत्तरदायित्व सौंपा है। महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि- विद्वानों को चाहिए कि अविद्या की निन्दा और दोषों का निवारण करें। जो शरीर और मन को विषयासक्ति, प्रमाद, हिंसा आदि बुरे कर्मों में लगाते है, उन्हें उनसे दूर करें तथा सर्वत्र सद्गुणों का प्रसार करें। विद्वज्जन सब मनुष्यों को सब विद्याएं पढ़ाकर विद्यावान्, बहुश्रुत, स्वछन्द और सुरक्षित कर दें जिससे वे संशयरहित होकर सदा सुखी रहें। विद्वान् शिक्षक का कर्त्तव्य राष्ट्र के भावी कर्णधार शिष्यों को विद्या एवं चरित्र दोनों की शिक्षा देकर सुयोग्य बनाना है। इसके लिए उन्हें अगाध पाण्डित्य के साथ-साथ सच्चरित्रता, धार्मिकता आदि अन्य विविध गुणों से भी भूषित करना आवश्यक है। अध्यापक कैसे हों? इस विषय पर महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि- जो नवीन-नवीन विद्याओं का ग्रहण करने के इच्छुक, ऐश्वर्य के अभिलाषी, जितेन्द्रिय, विद्वान् अध्यापक लोग अज्ञानियों को ज्ञान देकर विद्वान् करते हैं, वे ही पूजनीय होते हैंञ जो मेधावी, परोपकारी, आप्त विद्वान् , पूर्ण पण्ड़ित, विद्या के ऐश्वर्य से युक्त, अहिंसक, ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय पुरूष हो, उसी को योग्य अध्यापक जानकर शिष्यों को अपनी सभी शंकाओं का निवारण करना चाहिए। किन्तु जो अविद्वान्, ईर्ष्यालु, कपटी और स्वार्थी मनुष्य हो, उससे सर्वदा दूर रहना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थों में शिक्षा के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश ड़ालते हुए ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के भाष्य में भी अनेक वेदमन्त्रों का शिक्षापरक अर्थ करते हुए शिक्षाविषयक महत्त्वपूर्ण तथ्यों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है, जिसके माध्यम से वैदिक शिक्षा विज्ञान भी हमारे सम्मुख व्यक्त होता है। ऋषि के मन्तव्यानुसार वेद में शिक्षा की उपादेयता तथा अनिवार्यता, विद्या प्राप्ति के उपाय, शिक्षकों की योग्यता तथा कर्त्तव्य, विद्यार्थियों के कर्त्तव्य, विद्वान् अध्यापक द्वारा सुपात्र-कुपात्र के विचारपूर्वक विद्यादान विद्वानों के कर्त्तव्य तथा उनके द्वारा शिल्पविद्या की उन्नति, समाज में विद्वानों का सेवन व सत्कार, कन्याओं की शिक्षा में दण्ड़ का विधान, राजकार्यों में विद्वानों के सत्परामर्श की ग्राह्यता आदि विषयों का सम्यक् स्पष्टीकरण दृष्टिगत होता है। महर्षिकृत वेद भाष्य के शिक्षाविषयक तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण तथा सामयिक दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। शिक्षा के सुफल को पाने के लिए आज के निर्धारित शिक्षा सम्बन्धी मापदण्ड़ परिवर्तनीय हैं। पूर्वकाल में वेदों की सहायता लेकर गौतम वशिष्ठ, आपस्तम्ब आदि धर्मसूत्रकारों ने अपने ग्रन्थों में ब्रह्मचारी शिष्य के कर्त्तव्य, आचार्य का महत्त्व तथा उनके कर्त्तव्य आदि प्रकरण प्रतिपादित किए हैं। वेदों में शिक्षा विषयक वे तत्त्व कहां किस प्रकार निहित हैं यह प्रमुखतया दयानन्द के वेदभाष्य से ही हमें ज्ञात होता है।

महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित साहित्य में जिस शिक्षा विज्ञान का विशद वर्णन मिलता है, निश्चय ही शिक्षा की उस सरणि से छात्रों को शिक्षित करने वाले सुयोग्य शिक्षक के प्रयास से वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्र सम्बन्धी समस्त समस्याओं का समाधान सम्भव है। समस्याओं का निदान हमारे मन-मस्तिष्क में है और निर्मल अन्त:करण का निर्माण शिक्षक, आचार्य और गुरूजनों के अधीन है। जिसके प्रकाश में व्यक्ति अपना एवं समाज का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। उत्तम शिक्षा के इस सर्वातिशयी महत्व को हमें स्वीकार करना चाहिए।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो।
त्वां वर्धन्तु नो गिर:।। **ऋ. १.४.८**

भावार्थ-हे सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर पिता जी ! सर्व वेद साक्षात् और परम्परा से आपकी महिमा को कथन कर रहे हैं। हम पर कृपा करो कि हम सब आपके पुत्रों की वाणियाँ भी, आपके निर्मल यश को गाया करें, जिससे हम सबका कल्याण हो।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।। **ऋ. ५.८२.५**

भावार्थ-हे सकल जगत् के कर्त्ता परमात्मन्! कृपा करके आप हमारे सब दु:खों के कारण सब पापों को दूर कर दें। भगवन् ! कल्याण कारक जो अच्छे गुण-कर्म-ज्ञान-उपासनादि उत्तम-उत्तम पदार्थ हैं, उन सबको प्राप्त करा दें, जिससे हम सच्चे धार्मिक तेरे ज्ञानी और उपासक बनकर अपने मनुष्य-जन्म को सफल करें।

युद्ध हेतु सनद्ध एक सैनिक की स्थिति

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

स्वामी दयानन्द के कथनानुसार वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सब विद्याओं में युद्ध विद्या भी महत्वपूर्ण है। इसलिए ऋग्वेद और अथर्ववेद में उसका विस्तृत वर्णन हुआ है। इस लेख में ऋग्वेद के आधार पर हम यह प्रदर्शित करना चाहेंगे कि युद्ध में जाने के लिए प्राचीन काल में सैनिक को किस प्रकार तैयार होना पड़ता था। ऋग्वेद मण्डल 6 के सूक्त 75 में इस विषय का वर्णन इस प्रकार है- युद्ध में जाने से पूर्व सैनिक अपने शरीर पर कवच धारण करता है। इस सूक्त का ऋषि पायुर्भाद्राज तथा देवता वर्म (कवच) है-

जीमूत स्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे।

अनाविद्धया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तुछः।। ऋ 6.75

अर्थ-(यत्) अब (समदाम्) संग्रामों के (उपस्थे) उपस्थित होने पर एक योद्धा (वर्मी) कवच वाला होकर, कवच को धारण करके (याति) रणांगन में गति करता है तो इसका (प्रतीकम्) रूप(जीमूतस्य इव) जलों से परिपूर्ण मेघों के समान (भवति) होता है। लोहे से बना हुआ कवच योद्धा को बिल्कुल बादल के समान बना देता है। हे सैनिक। (त्वम्) तू (अनाविद्धया) शत्रुओं को बाणों से न बिंधे हुए (तन्वा) शरीर से युक्त हुआ (जय) विजय को प्राप्त कर (त्वा) तुझे (सः) वह (वर्मणः महिमा) कवच की महिमा (पिपर्तुः) पालित करे।

भावार्थ-युद्ध में जाने से पूर्व सैनिक अपने शरीर पर कवच धारण करता है। कवच के धारण करनेसे उसका शरीर शत्रु के बाणों से बच जाता है। कवच के धारण करनेसे वह बादल के समान दिखाई देता है। सैनिक में उत्साह आ जाता है जो उसे शत्रु पर विजय प्राप्त करने को प्रेरित करता है। सैनिक द्वारा कवच धारण करने के बाद शस्त्र के रूप में वह धनुष को ग्रहण करता है।

धन्वना जा धन्वना जिं ज्येम धन्वनाः तीव्राः समदे जयेम।
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम।। ऋ. 6.75.2

अर्थ-(धन्वना) धनुष के द्वारा, युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों के द्वारा (गाः) हम शत्रु द्वारा चुराई गई गौवों को, अपनी भूमि को फिर से जीतने वाले बनें। (धन्वाना)इस धनुष से (आजिम्) संग्राम को (जयेम) जीतें। (धन्वना)इस धनुष से ही (तीव्राः) बड़े उद्धत स्वभाव वाले (शत्रोः) शत्रु को (अपकामं कृणोति) विजय की कामना को विनष्ट किया जाता है।

भावार्थ-श्रेष्ठ हथियारों का उपयोग ही हमें विजय दिलाता है हमारे पास जो भी अस्त्र-शस्त्र हों वह व्यवहार योग्य हो जैसे हमारे पास धनुष है तो बाण आदि भी होना चाहिए। बन्दूक है तो गोलियां भी होनी चाहिए।

वक्ष्यन्ती वेदा गनीगन्ति कर्ण प्रियं सखायं परिषस्वजाना।

योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इयं समने पारयन्ती।। ऋ. 6.75.3

अर्थ-(प्रियं सखायम्) अपने मित्र सखा (पति) को (परिषस्वजाता) आलिंगन करती हुई (योषा इव) पत्नी के समान, इषु का आलिंगन करती हुई (इयं ज्या) यह डोरी (वक्ष्यन्ती इव) कुछ कहना सा चाहती हुई (कर्ण आगनीगन्ति) कान के समीप आती है। (अधि धन्वन्) धनुष पर (विततता) फैली हुई (समने पारयन्ती) युद्ध में पार को प्राप्त करती हुई यह (ज्याःशिक्ते) अव्यक्त ध्वनि करती है।

भावार्थ-ऋग्वेद में उपमा अलंकार का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। इस ऋचा में भी उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है। कहा गया है कि धनुष से तीर चलाते समय धनुष की डोरी इस प्रकार धनुष धारी के कान पास आ जाती है जैसे कि अपने प्रिय पति को आलिंगन करती हुई पत्नी पति के कान के पास आकर कुछ कहती है।

ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं विभृतामुपस्थे।

अप शत्रुन्विध्यतां संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्राम्।। ऋ. 6.75.4

अर्थ-(ते) वे (आर्त्नि) धनुष्को दिया(समना योषा इव) समान मनवाली (समनस्का)स्त्री की तरह (आचरन्ती) आचरण करती हुई, ये धनुष्कोटियां (बिभृताम्) सैनिक का धारण करती हैं। (इमे) ये (संविदाने) परस्पर संज्ञान वाली होती हुई, विसंवाद रहित होती हुई धनुष्कोटियां (अमित्रान्) शत्रुओं को (विष्फुरन्ती) हिंसित करती हुई (शत्रून्) शत्रुओं को (अपविध्यताम्) विद्ध करके दूर भगा दो।

भावार्थ-इस ऋचा में भी उपमा अलंकार है। ये धनुष्कोटियां समान मनवाली स्त्री की तरह आचरण करती हुई जैसे वह स्त्री पति के सानिध्य को नहीं छोड़ती, उसी प्रकार सैनिक को धारण करती है।

फिर योद्धा का एक तीर से तो काम चलता नहीं है उसके पास तरकस होना चाहिए और उसमें अनेक तीर होना चाहिए। अगली ऋचा में इसका वर्णन हुआ है। फिर यदि सैनिक रथी है तो उसके पास रथऔर सारथि भी होना चाहिए।

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथि।

अभीशूनां महिमानं पनायतु मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः।। ऋ. 675.6

(रथे तिष्ठन्) रथ पर स्थित हुआ (सुषारथि) उत्तम सारथि) यत्र यत्र कामयते) जहाँ जहाँ चाहता है वहाँ-वहाँ (वाजिनः) घोड़ों को (पुरः नयति) आगे ले जाता है। सारथि भी बिना लगाम लगाये घोड़ों पर नियंत्रण नहीं रख सकता है, इसलिए कहते हैं कि (अभी शूनाम्) रश्मियों की, लगाम की (महिमानम्) महिमा को (पनायत) स्तुत करो। ये (रश्मय) लगामें ही (मनः पश्चात्) मन के अनुकूल होती हुई, सारथि के मन के अनुसार (अनुयच्छन्ति) घोड़ों को नियंत्रण में रखती हैं।

भावार्थ-रथी के रथ को चलाने के लिए एक कुशल सारथि की आवश्यकता होती है। सारथि ही रथ को जहाँ आवश्यकता हो ले जाता है। घोड़ों पर नियंत्रण के लिए उनके लगाम लगाने की आवश्यकता होती है। लगाम के बिना घोड़ों पर नियंत्रण नहीं रखा जा सकता है।

अगली ऋचा में घोड़ों के विषय में कहा गया है कि घोड़े तीव्र आवाज करते हुए अपने पैरों से शत्रु को आक्रान्त करते हैं।

अगली ऋचा में रथ में क्या हो? इसका वर्णन है।

रथ वाह नं हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म।

तत्रा रथमुप शग्मं सदेम-विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः।। ऋ 6.75.8

अर्थ-(यत्र) जहाँ रथ में (अस्य) इस सैनिक के (रथवाहनम्) रथ को संचालित करने वाले उपकरण (हविः) अन्न और (नाम आशुधं) शत्रुओं को नमाने वाले अस्त्र (निहितम्) रखे जाते हैं और (अस्य) इस योद्धा का (वर्म निहितम्) कवच रखा है (तत्र) वहाँ (वयम्) हम (विश्वा हा) सदैव (सुमनस्यमानाः) उत्तम मन वाले होते हुए (शग्मं रथम्) सुख कर रथ में उपसदेम) आसीन हो।

भावार्थ-रथ में युद्ध के सब उपकरण रखे हों। उनमें आवश्यक भोजन सामग्री आयुध कवच आदि रखे हों। फिर रथ के साथ रथ के रक्षक भी चलते हैं। ये अस्त्र-शस्त्र सन्नद्ध सैनिकों को द्वारा शत्रु समूह को अभिभूत करके राष्ट्र रथ के गोपा (रक्षक) कहलाते हैं। अगली ऋचा में उनका वर्णन हुआ है।

युद्ध के समय ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्व, शूद्र आदि सभी मिल कर राष्ट्र रक्षा के कार्यों में संलग्न हो जाते हैं।

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावपृथिवी अनेहसा।

पूषा नः पातु दुरिता दृतावृधो रथा माकिर्नो अधशंस ईशत।। ऋ. 6.75.10

अर्थ-हमारे राष्ट्र के (ब्राह्मणासः) ज्ञान को प्रधानता देने वाले ब्राह्मण लोग तथा (पितरः) राष्ट्र-रक्षक क्षत्रियवर्ण (सोम्यासः) सोम का सम्पादन करने वाले हों। ऐसा होने पर (अने हसा) निष्पाप से (द्यावापृथिवी) द्युलोक और पृथ्वी लोक (नः शिवे) हमारे लिए कल्याण कारक हो। ब्राह्मण और क्षत्रिय के ठीक होने पर राष्ट्र में पाप नहीं फैलते। इस राष्ट्र में (पूषा) पोषण करने वाले वैश्य वर्ग (ऋतावृधः नः) ऋत का, यज्ञ का वर्धन करने वाले हम लोगों को (दुरितात् पातु) दुर्गति से बचाये। अन्ना भाव के कारण राष्ट्र में भुखमरी ही न फैल जाये। वैश्व वर्ग

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हवन-यज्ञ सम्बन्धित कुछ ज्ञातव्य तथ्य (आचमन)

-ले० सुशील वर्मा, गली मास्टर मूलचन्द वर्मा फाजिल्का-152123 (पंजाब)

अग्निहोत्र प्रारम्भ करने से पहले आचमन की क्रिया का विधान है। प्रश्न यह है कि आचमन क्यों किया जाए? इसका उत्तर शतपथ ब्राह्मण प्रथम वचन ही दे रहा है।

''अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति, तेन पूतिरन्तरतः।

मेध्या वा आपः मेध्यो भूत्वा व्रतमुपयानीति।। शतपथ''

अर्थात पुरुष अमेध्य है, अर्थात यज्ञ करने के योग्य नहीं। वह झूठ बोलता रहता है और झूठ बोलने वाला याज्ञिक नहीं हो सकता। इसलिए वह सत्य की याचना करता है। यह जल मेध्य अर्थात यज्ञमयी है। परमात्मा यज्ञ स्वरूप है, इसलिए मैं भी यज्ञमयी बन जाऊँ और इस पवित्र जल को ग्रहण करके उस उपास्य देव की उपासना करने का अधिकारी बन जाऊँ। यही आचमन की प्रतिज्ञा है,आचमन नहीं तो यज्ञ नहीं।

आचमन ब्रह्मतीर्थ से मणिबन्ध की और-क्योंकि ब्रह्मतीर्थ ऐसा क्षेत्र है जहाँ नाड़ियों का केन्द्र स्थित है। ऐसे आचमन करने से जल प्रभावकारी ढ़ंग से हमारे शरीर को तरंगित करता है। आचमन मन्त्र पूर्ण होने पर ही करना चाहिए। मन्त्र बोलते समय अर्थ विचार पूर्वक आचमन ही सार्थक है। ऐसा महसूस करें, मानो उस परमपिता परमात्मा को प्रत्यक्ष स्वरूप' शरीर में शनैः शनैः प्रविष्ट हो रहा है। तब पूरा शरीर तरंगित हो उठेगा। रोम रोम में दिव्यता, आलौकिकता आप को चमत्कारी रूप से आह्लादित कर देगी।

आचमन जल से ही क्यों? जल पवित्र है, और जल से आचमन करके वह व्रत ग्रहण करता है मैं पवित्र बनूँगा।

''पवित्र वा आपः पवित्रपूतो व्रतुमपायानीत''(शतपथ1/1/1/4)

जो मनुष्य सत्य का व्रत ग्रहण कर लेता है वह मनुष्य कोटि से देवकोटि में आ जाता है। **सत्यं वै देवाः अनृंत मनुस्याः (शतपथ 1/1/1/4)**

जल शान्ति, शीतलता एवं पवित्रता का प्रतीक है। जल शरीर के अन्दर प्रवेश कर कफ आदि की निवृति करता हुआ ज्ञानतन्तुओं में शान्ति स्थापित कर शीतलता एवं पवित्रता प्रदान करता है। क्यों कि वेद में विद्युत को 'अप्सरा' संज्ञा दी गई है, अर्थात ''अष्सु सरति'' जल में रहने वाली। यह विद्युत हमें चेतना एवं स्फूर्ति देती है। इस के अतिरिक्त जल शब्द 'ज' और 'ल' अक्षरों से बना है। **''जायते अस्मात् सकलं विश्वं स 'ज':''** अर्थात जिससे सारा संसार उत्पन्न होता है। 'ल'- **''लीयते अस्मिन सकलं विश्वं स 'ल'।''** जिसमें सारा संसार लीन रहता है अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त जल हमारे जीवन में सहायक है। जल तो अमृत है। दुनिया में और कोई अमृत हो नो हो परन्तु जल तो निश्चय पूर्वक अमृत है, क्यों कि हम इसके बिना जीवित ही नहीं रह सकते।

जल हृदय क्षेत्र तक ही जाए:क्योंकि हम इस जल में उस परम सत्ता की अनुभूति कर रहे हैं तो वह अनुभूति तो हृदय से ही हो सकती है। जल की मात्रा इतनी न्यून भी न हो कि हृदय क्षेत्र तक पहुँच ही न पाए और न ही इतनी अधिक हो कि वह पेट की पूर्ति कर दे। वास्तव में ब्रह्मक्षेत्र में जल मात्रा उतनी ही आती है जो हृदय तक पहुँच सके।

अंग स्पर्श मध्य की हो दो अंगुलियों से ही क्यों-आत्मा और स्थूल शरीर में जो माध्यम का कार्य करता है, वह है अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित, अहंकार) बुद्धि निर्णय करती है और इन्द्रियों द्वारा प्रदत्त भोग व सुखदुखादि आत्मा को यही बुद्धि प्राप्त करवाती है। स्थूल शरीर और आत्मा में बुद्धि माध्यम है और अंगुलियों में मध्यमा बुद्धि का प्रतीक है और मध्यमा के साथ अनामिका- जिसका कोई नाम नहीं और यह आत्मा की प्रतीक है। बुद्धि आध्यात्मिक होकर यज्ञ कर्म करती है और उसके साथ अनाम आत्मा जुड़ जाती है। इसलिए अंग स्पर्श मध्यमा (बुद्धि) और अनामिका (आत्मा) से किए जाते हैं। इसी प्रकार कनिष्ठा-**''कणे कणे तिस्ठतीति कनिस्ठः कनिष्ठोताः''** अर्थात जो कण कण में समाया है और वह है परमात्मा। इस प्रकार बुद्धि (मध्यमा) और आत्मा (अनामिका) के सहचर्य से आध्यात्मिक भाव से ओत प्रोत होकर परमात्मा (कनिष्ठा) को प्राप्त करती है। यदि मध्यमा (बुद्धि) अनामिका (आत्मा) की ओर जाएगी तो (कनिष्ठा) परमात्मा को प्राप्त कर लेगी और यदि यह मध्यमा (बुद्धि) तर्जनी की ओर गई तो काम, क्रोध, लोभ, मोह में आत्मा को फंसा देगी। इसलिए अंग स्पर्श के लिए मध्यम एवं अनामिका का ही चयन किया गया।

आचमन तीन बार क्यों? क्यों कि यह प्रतीक है आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यामिक शान्ति की प्रार्थना का।

आचमनके लिए तीन मन्त्रों का विनियोगः स्वामी जी ने आचमन के लिए तीन मन्त्रों का विनियोग किया जो कि तैत्तिरीय आरण्यक 10.32.35 से है और अंग स्पर्श मन्त्र पारस्कर गृह्य सूत्र 1.3.25 से जो कि तै. आ. 7.63 से तुलनीय हैं

पहला मन्त्रः ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

हे सर्वरक्षक अमर परमेश्वर। आप मेरे बिछौना अर्थात सब जगत के आधार एवं आश्रय हो। यह सत्यवचन मैं सत्यनिष्ठापूर्वक मानकर कहता हूँ। आचमन के द्वारा आपको अपने अन्तःकरण में ग्रहण करता हूँ।

दूसरामन्त्रः ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।

हे अमृत स्वरुप (रक्षक) परमेश्वर आप हमारे आच्छादक वस्त्र के समान अर्थात सदा सर्वदा सब ओर से रक्षक हो। यह सत्यवचन मैं सत्यनिष्ठापूर्वक मानकर कहता हूँ और अपने अन्तः करण में ग्रहण करता हूँ।

तीसरा मन्त्र : ओ३म् सत्यं यशः श्री मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

हे सर्वरक्षक (अमृत सत्य) ईश्वर सत्याचरण यश एवं प्रतिष्ठा विजय लक्ष्मी शोभन व्यवहार एवं आत्म गौरव, धन ऐश्वर्य मुझ में स्थित हों। यह मैं सत्यनिष्ठापूर्वक प्रार्थना करता हूँ और आपको अन्तःकरण में ग्रहण करता हूँ।

पहले मन्त्र में परमात्मा को अपना आधार एवं आश्रय देने वाला कहा गया है,वहीं दूसरे मन्त्र में उस परमपिता परमात्मा को अपना ओढ़ना अर्थात उसे छत्र छाया (सर्व रक्षक) स्वीकार किया गया। वहीं तीसरा मन्त्र तो बहुत ही मार्मिक है। इस मन्त्र में सत्यं, यशः एवं श्रीं की घोषणा है। सत्य मनुष्य के मस्तिष्क में तर्क द्वारा निर्णीत सिद्धान्त सत्य है। यदि वह मसितष्क तक ही सीमित है तो सत्य कहलाएगा, यश नहीं। जब इस निर्णीत सत्य को हृदय स्वीकार कर लेगा तभी वह यश रुप धारण कर लेगा। यश शब्द का अर्थ है व्याप्त हो जाना, छा जाना। व्यक्ति के किसी गुण का लोक हृदय तक छा जाना ही यश है। यह सत्य का ही दूसरा रुप श्रद्धा है-मस्तिष्क में सत्य और हृदय में वही श्रद्धा रूप। श्रद्धा से आविष्ट व्यक्ति जब उसे आचरण का रूप दे देता है तभी सत्य श्री का रूप धारण कर लेता है।

उद्यान में लगी कली 'सत्य' रूप है, खिला हुआ फूल 'श्री' रूप है, और दिशाओं में फैली सुगन्ध लोक हृदय पर छा जाने से 'यश' रूप है। अन्यथा धन जब सत्य और यश को आश्रय देता है तभी धन 'श्री' कहलाता है। नहीं तो धन लक्ष्मी है, दौलत है, पर 'श्री' नहीं। क्योंकि 'श्री' शब्द 'श्रिश्रयें' धातु से बना है जिस का अर्थ है आश्रय देना। नामकरण संस्कार में बालक को आर्शीवाद देते हुए उसे वर्चस्वी तेजस्वी, श्रीमान कहा जाता है। धन होने पर लक्ष्मीवान अथवा धनवान तो कहा जा सकता है, परन्तु श्रीमान नहीं। श्रीमान तो तभी कहा जाएगा जब उसका धन किसी को आसरा दे, किसी को धन से सहायता दे। सारांश यह कि सत्य से यश प्राप्त होता है, और यश से सम्पत्ति प्राप्त होती है और वही सम्पत्ति दूसरों को आश्रय दे तो ही श्री। सत्य पर चला जाए तो यश की प्राप्ति भी होगी और श्री (धन) की प्राप्ति भी होगी और यदि हमारा रास्ता सत्य का नहीं है तो प्राप्त किया धन एवं यश अल्पकाली तो हो सकता है,दीर्घ समय तक न यश प्राप्त होगा, न श्री।

अन्त में अंग स्पर्श मन्त्र-हे प्रभो मेरे मुख में वाणी को जीवित बनाओ, यशस्वनी एवं सत्यवादिनी, प्रियवादिनी और शुभवादिनी हो। मेरे प्राणों को सुरक्षित करे। मेरे नेत्रों में दृष्टि शक्ति और मदुदृष्टि हो। मेरी आँखों को विश्वामित्र बनाओ, इन्हें लज्जा से भर दो **''भद्रं पश्येमाक्षाभिर्यजत्रा''** एवं **''मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे''** का वरदान दो। इसी प्रकार **''भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाः''** का आशीष दें। बाहों में बल हो, सभी के सहायता के लिए, संहार के लिए नहीं।

सशक्त जँघाँ मुझे सन्मार्ग पर ले जाएँ। **''असतो मा सद्गमय''।** शरीर के अंग प्रत्यंग सुदृढ़ हों।

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि ये मन्त्र (अंग स्पर्श) यथावत रूप में किसी ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है। 'ओ३म्' और 'अस्तु' पदों से रहित किंचित पाठान्तर के साथ कई ग्रन्थों में उपलब्ध है। उदाहरण स्वरूप पारस्कर गृह्य 1/3/25 एवं तैत्तिरीय आरण्यक 7/63 **(क्रमशः)**

रंग भरो प्रतियोगिता दो चरणों में सम्पन्न

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका द्वारा रंग भरो प्रतियोगिता का आयोजन दो चरणों में सम्पन्न हुआ। प्रथम चरण की प्रतियोगिता आर्य समाज मन्दिर फाजिलका में 6 अक्तूबर, 2017 को आयोजित की गई। जिसमें दस स्कूलों के 362 छात्र/छात्राओं ने अपनी कलात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। द्वितीय चरण की प्रतियोगिता सर्वहितकारी विद्या मन्दिर फाजिलका में, 7 अक्तूबर को सम्पन्न हुई। जिसमें केवल इसी विद्यालय के 520 छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए। इतनी अधिक संख्या में एक ही विद्यालय के छात्रों का सम्मिलित होना स्वयं में एक रिकार्ड है, वह भी केवल नर्सरी से दूसरी कक्षा तक के छात्रों का सम्मिलित होना। जो सर्वहित सर्वदा अनुकरणीय है।

वस्तुत: यह विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती मधु शर्मा का वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं संस्कार जागरण के प्रति उनकी असीम श्रद्धा, निष्ठा तथा विश्वास का परिचायक है।

यह प्रतियोगिता नर्सरी, एल के जी.यू के जी, पहली और दूसरी कक्षा तक पांच ग्रुपों में आयोजित की गई। प्रतियोगिता के संयोजक वेद प्रकाश शास्त्री के अनुसार इसका मुख्य उद्देश्य धार्मिक पर्व-त्योहार एवं शुभ कार्योंके अवसर पर प्रयोग होने वाले प्रतीकों से छात्रों को अवगत कराना है। इसीलिए प्रतियोगिता में रंग भरने हेतु स्वस्तिक, कलश, ओ३म्, नमस्ते, वेद-पुस्तक, ओ३म् ध्वज सदृश रेखाचित्र दिए जाते हैं, जिनमें से किसी एक में रंग भरना होता है। छात्रों ने बड़े उत्साह के साथ विभिन्न रंगों द्वारा अपने चित्र भरे।

शास्त्री जी ने सभी शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना की। **वेद प्रकाश शास्त्री**

वैदिक शिक्षा परिषद फाजिलका पंजाब-152123

मो. 9463428299

संस्कारक श्रीवत्स जयन्ती समारोह एवं जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

ओड़िशा प्रदेश के सर्वप्रथम आर्यसमाजी, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का ओड़िया भाषा के आद्य अनुवादक श्री वत्स पण्डा जी का 148 वां जयन्ती महोत्सव करुणा वरुणालय प्रभु की कृपा से 01.10.1017 को तनरडा गोरक्षा आश्रम के मन्त्री आर्यजगत् के युवा वैदिक विद्वान, गुरुकुल हरिपुर के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के कुशल संयोजकत्व में एवं आश्रम के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के प्रबल पुरुषार्थ से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। जयन्ती समारोह कार्यक्रम में गुरुकुल वेदव्यास राऊरकेला के अधिष्ठाता डॉ. देवव्रत आचार्य जी,इं, प्रियव्रत दास, माता शन्नोदेवी जी आदि तथा ओड़िशा के विभिन्न आर्यसमाजों से शताधिक आर्यमहानुभाव उपस्थित थे।

श्रीवत्स जयन्ती समारोह के अवसर पर 2-4 अक्टूवर 2017 को तनरडा आश्रम में ही त्रिदिवसीय **जीवन निर्माण शिविर** सम्पन्न हुआ, जिसमें सौ के लगभग प्रबुद्ध युवा शिविरार्थी भाग लिये थे, शिविर में प्रशिक्षण देने हेतु डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी, गुरुकुल हरिपुर, स्वामी मुक्तानन्द जी परिव्राजक, राजस्थान, व ब्र. वामदेव आर्य जी केरल से एवं मन्त्रोच्चारण व यज्ञ व्यवस्था आदि हेतु गुरुकुल हरिपुर के ब्रह्मचारी उपस्थित थे।

वैदिक सिद्धान्त, यज्ञ, योग, आध्यात्मिकता की ओर से भटकती युवा पीढ़ी को जीवन निर्माण करने की कला सीखाने तथा उनके अन्दर वैदिक सिद्धान्तों के प्रति श्रद्धा भाव जगाने के उद्देश्य से इस शिविर का आयोजन किया गया था, अनेक शिविरार्थी दैनिक अग्निहोत्र करने और ऋषिकृत ग्रन्थों का स्वाध्याय करने का संकल्प लेकर गये। प्रभु की कृपा से यह शिविर अपने उद्देश्यों में सफल रहा।

नशा मुक्ति पर सैमीनार आयोजित किया गया

आज दिनांक 4-10-17 को आर्य सीनियर सकैण्डरी स्कूल, लुधियाना में NGO की सदस्या गगनदीप कौर के द्वारा नशा मुक्ति के लिए एक सैमीनार करवाया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में स्कूल मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी उपस्थित हुए। उन्होंने अपने भाषण में बच्चों को बताया कि नशा करने से कैंसर, अस्थमा, चर्मरोग जैसी कई बीमारियां लग जाती है। नशे से मनुष्य शरीर खोखला हो जाता है। उन्होंने बच्चों को नशा न करने की शपद दिलाई। इस मौके पर स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती रेखा कहौल ने बच्चों को नशा न करने की सलाह देते हुए अच्छे नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। इस सैमीनार में स्कूल के सभी अधियापक व अध्यापकाएं उपस्थित थे। **विनोद गांधी**

स्वर्गीय पंडित सुनील शास्त्री जी का श्रद्धांजलि समारोह 8 नवम्बर को

आर्य समाज मन्दिर (गुरुकुल विभाग) फिरोजपुर शहर की तरफ से स्वर्गीय पंडित सुनील शास्त्री जी का श्रद्धांजलि समारोह 8 नवम्बर को आर्य समाज मन्दिर कालिज विभाग में मनाया जायेगा। उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर सुबह 9.30 बजे से 11 बजे तक शान्ति यज्ञ होगा उपरान्त श्रद्धांजलि दी जायेगी।

पंडित सुनील शास्त्री जी 22 वर्ष की आयु में फिरोजपुर शहर की दो आर्य समाज का पुरोहित पद सम्भाला था तथा 22 वर्ष तक वह दोनों आर्य समाज मन्दिर में रहे। थोड़े ही समय में उन्होंने फिरोजपुर में ही नहीं बल्कि आसपास में ही लोग तथा आर्य समाज में उनका नाम चमकने लगा जहां भी जाते थे वह अपनी छाप छोड़कर आते थे वह विद्वान तो थे ही ईमानदार इन्सान भी थे। पीछे पत्नी तथा बेटा, बेटी छोड़ गये।

इतनी छोटी सी आयु में उनका इस संसार को छोड़कर चले जाने से आर्य जगत् को बहुत बड़ा नुक्सान हुआ है यू ही कहना सत्य होगा फिरोजपुरकी दोनों आर्य समाज मन्दिर अपाहिज हो गई है।

सभी से निवेदन है कि उनकी पुण्य तिथि पर आकर श्रद्धांजलि दें।

इति ओ३म् शन्ति:-शान्ति: **राजीव गुलाटी (महामन्त्री)**

आर्य समज जीरा में दशहरा पर्व मनाया गया

30.09.2017 शनिवार को आर्य समाज जीरा में दशहरा का पर्व बड़ी ही श्रद्धा व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें सबसे पहले श्री किशोर कुणाल शास्त्री जी ने बृहदयज्ञ का संयोजन किया, जिसमें यजमान पद को नीलम रानी सुशोभित किया। काफी संख्या देखी गई। बच्चों में काफी उमंग भी देखा गया। यज्ञान्त में पुरोहित श्री किशोर कुणाल जी ने सभी को दशहरे की ढेर सारी बधाईयाँ दी और कहा कि दशहरा पर्व हमें यह सिखाता है कि हमें बुराई नहीं करनी चाहिए। हम हर साल दशहरा पर्व को मनाते हुए रावण का पुतला जलाते हैं। यदि हम अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या-द्वेष, मद, मत्सर आदि इन रावणों को एक-एक करके भी मारने का संकल्प दृढ़ कर लें तो हमारा कल्याण हो जाए, आसुरी वृत्तियों के नाश के बिना चाहे हम सदियों दशहरा पर्व मनाते रहें, रावण का पुतला जलाते रहें, आज हम सभी भी यह गाँठ बाँधे कि हमें मर्यादा का कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। मर्यादित जीवन ही हमारी संस्कृति और सुसंस्कार की अमिट छाप है। अन्त में समाज के वरिष्ठ प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी ने भी सभी आर्य भाई-बहनों की अपनी शुभ कामनाएँ प्रकट की और जलपान भी करवाया। तत्पश्चात् शांति पाठ के उपरान्त सत्संग समाप्त किया गया।

किशोर कुणाल, पुरोहित आर्य समाज जीरा

ऋषि निर्वाण उत्सव मनाया

आर्य समाज मन्दिर, जी० टी० रोड़, फिरोजपुर छावनी में **ऋषि निर्वाण उत्सव** 19-10-17 को बड़ी धूम धाम से मनाया गया। **पं० मनमोहन शास्त्री जी** ने ऋषि निर्वाण उत्सव, दीपावली एवं अमावस्या की विशेष आहूतियां डलवाकर यज्ञ करवाया।

उसके उपरान्त प्रधान, श्री विजय आनन्द जी ने इस पर्व पर अपने विशेष विचार रखे और ऋषि दयानन्द जी पर लिखी बड़ी हो दिल को छूने वाली उनकी जीवनी पर प्रकाश डालकर भजनोपदेश किया। इसके साथ-साथ श्री राम चन्द्र जी के विभिन्न मर्यादाओं के बारे में बड़े सुन्दर विचार रखे।

इस अवसर पर आए हुए सभी बच्चों का कार्यक्रम रखा गया। सभी बच्चों को उपहार भी दिए गए। **'योग शक्ति क्लब'** के बच्चों को श्री सुधीर कुमार विकास विहार/फिरोजपुर शहर से प्रथम बार लेकर आए। सभी बच्चों को आर्य समाज का कार्यक्रम बहुत पसन्द आया और उन्होंने कहा कि भविष्य में आर्य समाज में आया करेंगे।

शान्तिपाठ के उपरान्त मुख्य यज्ञमान जो **बड़ोदरा (गुजरात)** से पधारे **श्रीमती अंजली आर्य** और **श्री ऋषिराज आर्य** ने बच्चों को प्रोत्साहित किया और सभी को खीर का प्रसाद बांटा।

अन्त में प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने सभी का धन्यवाद किया।

मनोज आर्य (महामन्त्री)

आर्य समाज, फिरोजपुर

पृष्ठ 2 का शेष-वेदो का त्रिकाल....

या वित्त, सूदजीवी हो या मोक्षसाधक, सबको प्रत्येक पग पर वेदों से निर्दोष एवं पूर्ण मार्गदर्शन मिलता है।

वेदों के पठन-पाठन में भी कोई भेद-भाव नहीं किया गया। वेदों के नाम पर वेदों के विरुद्ध जाकर कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने भेद-भाव अवश्य किया किन्तु उनकी करनी को वेदों की व्यवस्था बताना अन्याय होगा। वेदों की शिक्षा तो इस प्रकार रही है।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।

ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।

-यजुर्वेदः अध्याय-26, मन्त्र-2

इस मन्त्र के अनुसार वेद पढ़ने में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, चतुर्थ वर्ण, स्त्री-जाति और विद्याशून्य व्यक्तियों में कोई वर्ग-भेद नहीं है। ये सभी वेद पढ़ और सुन सकते हैं। प्रत्युत इनमें जो वेदों के विद्वान बन सकें वे समानाधिकारी होकर वेद पढ़ा और सुना भी सकते हैं।

वेद नित्य सनातन

चार वेदों में ईश्वर का उपदेश है किसी अन्य के वचन नहीं हैं। ईश्वर का उपदेश केवल वेदों में है कहीं अन्यत्र नहीं है। ईश्वर नित्य है ईश्वर का उपदेश भी नित्य है। संसार के अन्य पदार्थ काल-क्रम से बदलते रहते हैं। वेदों में काल-क्रम से कोई परिवर्तन या विकार नहीं आता। स्वयं वेद में कहा गया है-

याथतथ्यतोऽर्थान्, व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।

-यजुर्वेदः अध्याय-40, मन्त्र-8

अर्थात् परमात्मा ने अपनी शाश्वत प्रजा को न्यायपूर्वक समस्त पदार्थों की प्राप्ति कराने हेतु शाश्वत वेद का उपदेश किया है।

वेद सर्व-कल्याण के स्रोत हैं। वेद सब स्थानों के सब मनुष्यों के लिए सब कालों में सब दृष्टियों से प्रेरक, पोषक एवं मार्गदर्शक हैं। इनकी महत्ता एवं प्रामाणिकता कल भी थी, आज भी है और कल भी रहेगी। ये सनातन अर्थात,न कभी नये होते हैं, न पुराने होते हैं

अपितु चिर नवीन बने रहते हैं। इनकी प्रासंगिकता सदा थी, सदा है और सदा रहेगी।

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी के कुलपति दिवङ्गत

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी ओड़िशा के कुलपति, सेवावीर, दानवीर महात्मा वानप्रस्थ सत्यानारायण आर्य कोलकाता, सुजानगढ़ पिछले तीन साल से अस्वस्थ चल रहे थे उनका देहावसान 92 वर्ष की आयु में 6 अक्टूबर 2017 को सायंकाल 6 बजे रायपुर में हो गया, वे पिछले 35 वर्षों से उन्होंने अपना सारा समय समाज सेवा व जन कल्याण के लिये अर्पित किया था। प्रत्येक क्षण उनका यही विचार रहता था कि मैं किस प्रकार किसी अनाथ, विधवा, गरीब, असहाय दिव्यांगों की सेवा कर सकूँ। ओड़िशा, झारखण्ड, छ.ग.,राज., आसाम, आन्ध्रप्रदेश,म.प्र. आदि प्रदेशों में स्थित अनेक धार्मिक शिक्षण संस्थानों को वे अपने दान से सिंचित, पुष्पित व पल्लवित किये हैं, उनमें से गुरुकुल हरिपुर अग्रगण्य है।

इतनी बड़ी उम्र में भी गुरुकुल हरिपुर के सम्मानीय आचार्यों के साथ झारखण्ड, आन्ध्र प्र.आदि प्रान्तों में अनाथों विकलांगों को अन्न-वस्त्र वितरण हेतु गाड़ी में तीर-चार सौ कि.मी. की यात्रा कर लिया करते थे और कहा करते थे-**नर सेवा ही नारायण सेवा है, इन गरीबों की सेवा करने में मुझे आनन्द आता है।**

जीते हुए तो अपना सब कुछ दान में दिया ही मृत्यु उपरान्त मृतशरीर भी किसी के काम में आ जाये इसके लिये उनके द्वारा मृतशरीर को चिकित्सालय में प्रदान करने की लिखित घोषणा की गई थी, तदनुसार छ.ग. में स्थित भिलाई हास्पीटल में उनका शरीर दिया गया। ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, अनेक संस्थाओं के सहयोगी, दानी, परोपकारी व्यक्तित्व के चले जाने पर समाज को अपूरणीय क्षति हुई है, विशेषकर गुरुकुल हरिपुर उनका अभाव कई दिनों तक झेलता रहेगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं सम्माननीय आचार्यों के द्वारा उनकी आत्मा की शान्ति के लिये गुरुकुल में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा की गई, गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव जी कुलपति जी के द्वारा गुरुकुल हित में किये गये कार्यों का वर्णन कर श्रद्धांजलि अर्पित किये।

यज्ञ का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल में बच्चों की परीक्षा में सफलता हेतू प्रिंसीपल मैडम की अध्यक्षता में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। योगराज शास्त्री जी ने विधिपूर्वक मन्त्रोच्चारण करके यज्ञ सम्पन्न करवाया। शास्त्री जी ने बच्चो को सन्मार्ग पर चलने के लिए और महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं पर चलने के लिए प्रेरित किया। प्रिंसीपल मैडम ने शास्त्री जी का धन्यवाद किया। बच्चों को आशीर्वाद देते हुए मैडम ने कहा कि स्कूल का मुख्य उद्देश्य बच्चो को पढ़ाई के साथ-साथ ऐसे धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करके अपनी संस्कृति के साथ अवगत करवाना है।

पृष्ठ 4 का शेष-युद्ध हेतु सनद्ध एक....

कृषि, गोरक्षा तथा वाणिज्य द्वारा सदा सुकाल बनाये रखें और यज्ञों का वर्धन करें। प्रभु आप हमारा (रक्षा) रक्षण करिये। (अधशंसः) बुराई का शंसन करने वाले (नः) हमारा माकिः) मत (ईशत) स्वामी बन जाये। हम उसकी बातों में आकर पाप की और न बहक जायें।

भावार्थ-हमारे राष्ट्र के चारों वर्ण निष्पाप होकर अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र रक्षा में लग जायें। अगले मंत्र में वर्णन है कि हमारे बाण कैसी हल चल मचायें।

सुपर्णम् वस्ते मृगो अस्यादन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता।

यत्रा नरः सं चवि च द्रवन्ति-त्रास्मभ्यमिषवः शर्मयंसन्।।

ऋ. 6.75.11

अर्थ-बाण के अग्र भाग में कङ्क पक्षी के पंख को लगाते हैं, इससे बाण की गति में तीव्रता आ जाती है। यह इषु (सुपर्णम्) पंख को (वस्ते) धारण करता है।(अस्याः) इस इषु का (दन्तः) दांत के समान आकार वाला अग्रभाग (मृग) शत्रुओं को खोजता सा है,(मृगय माणः) इन्हें विद्ध करने की कामना वाला होता है। (गोभिः सन्नद्धा) गोविकार स्नायुओं से बद्ध हुआ-हुआ यह इषु (प्रसूता) प्रेरित हुआ-हुआ सा (पतति) शत्रुओं पर पड़ता है। (यत्र) जहाँ युद्ध में (नरः) मनुष्य (संद्रवन्ति) मिलकर इधर-उधर गति वाले होते हैं,(च) और (चिद्रवन्चि) विविध दिशाओं में अलग-अलग भाग खड़े होते हैं (तत्र) वहां रणांगण में (इषवः) ये बाण (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (शर्म यंसन) सुख को देने वाले हो।

भावार्थ-बाण के अग्र भाग में कंक पक्षी के पंख को लगाते हैं। यह बाण शत्रुओं को विद्ध करने की कामना वाला होता है। इससे शत्रुओं में भग दड़ मच जाती है। ये बाण युद्ध में हमारे लिए सुख कर बनते हैं।

अगले मंत्र में कहा गया है कि हमारे शरीर बाणों के लिए अभेद्य हों। कवच आदि के द्वारा हम अपनी रक्षा करने में समर्थ हों। इससे अगली ऋचा में कहा गया है कि एक कुशलसारथि कक्षा के समुचितप्रयोग से घोड़ों को रणांगण में तीव्रगतिवाला कर देता है। युद्ध में हाथ की रक्षा के लिए हस्तध्नः का उपयोग करते हैं। चौदहवीं ऋचा में इसका वर्णन है। युद्ध में जाते समय ही बाण के अग्र भाग को विष में बुझा लेता हैं जिससे शत्रु आसानी से मारा जा सकता है।

आलाक्ता या रूरूशीर्ष्ण्यथो यस्था अयो मुखम्।

इदं पर्जन्यरेतस इष्वै देव्यै बृहन्नमः।। **ऋ. 6.75.15**

अर्थ-बाण के अग्रभाग को विष में बुझा लेते हैं इससे (या) जो बाण (आल अक्ता) विष से सिक्ता है। (रूरूशीर्ष्णी) मृग श्रृंग से जिसका अग्र भाग बना हुआ है।(अथ उ) और निश्चय से (यस्याः) जिसका (मुखम्) मुख (अयः) लोहे का बना हुआ है। (पर्जन्यरेतसे) पर्जन्य की कार्यभूत इस (देव्यै इष्वै) युद्ध में विजय की कामना वाली (दिव्) इषु के लिए (इदम्) यह (बृहत्ः बहुत (नमः) आदर करते हैं। जिस सरकण्डे से इषु बना होता है वह बादल की वृष्टि से उत्पन्न होता है इसलिए उसे पर्जन्य रेतस कहा है। भावार्थ-बाण बादल की वृष्टिसे उत्पन्न सरकण्डे से बनाया जाता है। इस अग्र भाग हिरण के सींग से बना होता है। इसका मुख लोहे का बना होता है। बाण को विष में डुबो कर विषैला बनाया जाता है। इसके द्वारा शत्रु का विनाश किया जाता है।

अब एक ऋचा और लिख कर विषय को विराम देते हैं।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्तवा राजामृतेनानु वस्ताम्।

उपोर्वरीयो वरूणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु।।

ऋ. 6.75.18

अर्थ-तेरे मर्म स्थानों को कवच द्वारा आच्छादित करता हूँ। जीवन को दीप्त करने वाले सोम तुझे निरोगता से आच्छादित करे। द्वेष निवारण वरूण तेरे लिए विशाल से विशालतर सुख देने वाले हों। राग, द्वेष आदि सब शत्रुओं को पराजित करते हुए सब देव तुम्हें हर्षित करने वाले हों। इतिशम्।

ऋषि निर्वाण दिवस मनाया

आज दिनांक 18-10-17 को आर्य सी. सै. स्कूल ब्रांच वृन्दावन रोड़ के प्रांगण में दीपावली के अवसर पर महर्षि दयानन्द को याद करते हुए उनका निर्वाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस पवित्र अवसर पर स्कूल की मैनेजर श्रीमती विनोद गाँधी जी विशेष रूप से उपस्थित हुए। उन्होंने बच्चों को सम्बोधित किया और इस दिन की महत्ता के बारे में विशेष रूप से प्रकाश डाला। इस अवसर पर स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती रेखा कोहल जी ने भी इस दिवस की महत्ता से अवगत कराया। ब्रांच की प्रभारी श्रीमती अनुबाला और श्री राकेश अरोड़ा यूनियन प्रधान श्री जनकराज भगत और अध्यापकगणों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

अन्त में प्रबंधकत्री सभा के प्रधान श्री मनीष मदान जी ने भी बच्चों तथा अध्यापकों को अपने विचारों से अवगत कराया। **-प्रिंसीपल रेखा कोहल**

आर्य समाज तलवाड़ा का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज तलवाड़ा टाउनशिप जिला होशियारपुर के वार्षिक उत्सव के अवसर पर मंच पर विराजमान स्वामी सदानन्द जी अध्यक्षीय भाषण देते हुये जबकि उनके साथ बैठे हैं श्री मनोहर लाल जी आर्य, आर्य समाज तलवाडा के मंत्री सत्यपाल रल्हन, महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी, सभा कार्यालयाध्यक्ष जोगिन्द्र सिंह, पंडित सुरेश शास्त्री जी, श्री रणजीत आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आचार्य आर्य नरेश जी। दूसरे चित्र में उपस्थित जन समूह।

आर्य समाज तलवाड़ा का वार्षिक उत्सव दिनांक 20 अक्तूबर 2017 से 22 अक्तूबर 2017 तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन तथा श्री अरूण वेदालंकार जी के मधुर भजन होते रहे। प्रतिदिन प्रात:काल व सांयकाल यज्ञ, भजन व प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहा जिसका लोगों ने भरपूर लाभ उठाया। दिनांक 22 अक्तूबर 2017 रविवार को मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ के द्वारा किया गया। सभी यजमानों ने यज्ञ में आहुतियां डालकर यज्ञ को सम्पन्न कराया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय कुमार शास्त्री तथा पं. परमानन्द जी आर्य ने आए हुए सभी श्रद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान किया और यज्ञशेष दिया। यज्ञ के पश्चात दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। आर्य समाज के सभी अधिकारियों ने स्वामी जी का पुष्पमालाएं पहना कर हार्दिक अभिनन्दन किया। इसके पश्चात सभी श्रद्धालुओं ने प्रात:राश ग्रहण किया। ठीक 11:00 बजे स्वामी सदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री अरूण वेदालंकार जी ने प्रभु भक्ति का एक मधुर भजन सुनाकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित भजन सुनाकर उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए कार्यों का वर्णन किया। इसके पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी ने अपने विचार रखे और लोगों को वेद मार्ग पर चलते हुए पञ्च महायज्ञों को करने की प्रेरणा दी तथा अपने घरों को स्वर्ग बनाने को कहा। इस अवसर पर विशेष रूप से मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य आर्य नरेश जी हिमाचल प्रदेश से पधारे हुए थे। मुख्य अतिथि के रूप में सभा मन्त्री श्री रणजीत आर्य जी एवं सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री जोगिन्द्र सिंह जी उपस्थित थे। सभा के विद्वान श्री सुरेश शास्त्री जी ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि हमें अपनी संस्कृति, सभ्यता, मातृभूमि एवं मातृभाषा के ऊपर गर्व करना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य आर्य नरेश जी ने अपने प्रवचन में देश, धर्म, शिक्षा, संस्कृति आदि विषयों पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाकर ही मानव सुखी हो सकता है। उन्होंने कहा कि आज हम अपना खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार आदि को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करने में लगे हुए हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रणजीत आर्य ने कहा कि हम अपने महापुरूषों के जीवन से शिक्षा लेकर, उस पर चलने का प्रयास करें। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कहा कि हमें समाज के कार्यों में बढ़-चढ़ का सहयोग देना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। इसीलिए सभी आर्य सिद्धान्तों का अपने जीवन में पूर्णरूप से पालन करें। कार्यक्रम का मंच संचालन श्री मनोहर लाल आर्य जी ने किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आर्य समाज के सभी अधिकारियों एवं सदस्यों ने भरपूर सहयोग दिया। आर्य समाज के प्रधान श्री रजनीकान्त जी, मन्त्री श्री सत्यपाल रल्हन, पं. परमानन्द जी आर्य आदि महानुभाव इस अवसर पर उपस्थित थे। आर्य समाज के सभी अधिकारियों ने मिलकर सभी अतिथियों को सम्मानित किया तथा धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।–**सत्यपाल रल्हन मंत्री**

आर्य समाज जालन्धर छावनी में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज जालन्धर छावनी के वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष्य में आर्य समाज के प्रांगण में हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन। चित्र दो में मंच पर प्रवचन करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी एवं भजनोपदेशक श्री अरुण विद्यालंकार।

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वेद प्रचार सप्ताह दिनांक 25 सितम्बर 2017 से 1 अक्तूबर 2017 तक बडे उत्साहपूर्वक एवं श्रद्धापूर्वक मनाया गया जिसमें आर्य परिवारों एवं जालन्धर छावनी निवासियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पंडित विजय कुमार शास्त्री जी के वेदों पर प्रभावशाली प्रवचन हुए एवं भजनोपदेशक श्री अरुण कुमार विद्यालंकार जी के मधुर भजन हुये जिसे लोगों की बहुत सारी सराहना मिली। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में स्त्री आर्य समाज का भी विशेष सहयोग रहा।

इस अवसर पर परिवार सहित श्री सुरेन्द्र मोहन लाला, कुलभूषण लूम्बा, गणपत सोनी, रजनीश दीवान, राकेश आर्य एवं पुत्रवधू रिचा आर्य, श्रीमती कमलेश, मैडम संतोष शर्मा, मैडम संध्या, अशोक जावेद, रघुवीर सिंह नादौन, चन्द्रशेखर, मैडम भावना, मनजीत, प्रधान आर्य समाज जालन्धर छावनी श्री चन्द्र गुप्ता, हरेन्द्र गुप्ता, यतेन्द्र गुप्ता एवं बलविन्द्र कपूर, अयोध्या प्रसाद, प्रदीप कुमार, जितेन्द्र सेठ, राजेश चौहान, अजय चौहान, मैडम रितू, प्रियंका, अनुराधा, ज्योति, संदीप महाजन, रघुनाथ ठाकुर, डा. अशोक वर्मा, दीपक जैन, केशव अग्रवाल, मोनिका सोनी, मंत्री आर्य समाज जवाहर लाल महाजन एवं उनका पूरा परिवार यजमान के तौर पर यज्ञ में सम्मिलित हुआ। सभी ने कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। सोमवार से शनिवार तक प्रात: 6.30 बजे से लेकर 8.00 बजे तक हवन, भजन एवं प्रवचन तथा रात्रि 8.30 बजे से लेकर 10.00 बजे तक भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। मुख्य समारोह रविवार 1 अक्तूबर 2017 को सुबह 8.30 बजे से लेकर 11.30 बजे तक हुआ। इस कार्यक्रम में श्री सुशील कुमार वर्मा जी फाजिल्का से विशेष रूप से शामिल हुये और उनका प्रवचन भी हुआ जिसमें उन्होंने संस्कारों पर चलने और उसके महत्व पर विशेष बल दिया। कार्यक्रम के समापन पर ऋषि लंगर वितरित किया गया। मंच का संचालन आर्य समाज जालन्धर छावनी के मंत्री श्री जवाहर लाल महाजन ने किया।

–**जवाहर लाल महाजन मंत्री आर्य समाज**

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।